त्रिकालदर्शी स्थिति वेः श्रेष्ठ आसन द्वारा सदा विज-ी बनो

1-2-94

दिव्-ा बुद्धि वा विशाल बुद्धि का वरदान देने वाले त्रिकालदर्शी बापदादा अपने मास्टर त्रिकालदर्शी बच्चों प्रति बोले–

आज त्रिकालदर्शी बापदादा अपने सर्व मास्टर त्रिकालदर्शी बच्चों को देख रहे हैं। त्रिकालदर्शी बनने का साधन बापदादा ने हर बच्चे को दिव्-ा बुद्धि का वरदान वा ब्राह्मण जन्म की विशेष सौगात दी है। क्-ोंकि दिव्-ा बुद्धि द्वारा ही बाप को, अपने आपको और तीनों कालों को स्पष्ट जान सकते हो। दिव्-ा बुद्धि तथा -ाद द्वारा ही सर्व शक्ति-ों को धारण कर सकते हो। इसलि-े पहला वरदान दिव्-ा बुद्धि है। -े वरदान बापदादा ने सर्व बच्चों को दि-ा है। लेकिन इस वरदान को प्रत्-ाक्ष जीवन में नम्बरवार कार्-ा में लगाते हो। दिव्-ा बुद्धि त्रिकालदर्शी स्थिति का अनुभव कराती है। चारों ही सब्जेक्ट धारण करने का आधार दिव्-ा बुद्धि है। चारों ही सब्जेक्ट को सभी बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं, वर्णन भी करते हैं लेकिन जानना, वर्णन करना--ाह सभी को आता है। चाहे न-े हैं, चाहे पुराने हैं, इसमें सभी होशि-ार हैं लेकिन धारण करना–इसमें नम्बर बन जाते हैं। दिव्-ा बुद्धि की विशेषता-ें, दिव्-ा बुद्धि वाली आत्मा-ें कोई भी संकल्प को कर्म वा वाणी में लाने सम-ा हर बोल और हर कर्म को तीनों काल से जान कर फिर प्रैक्टिकल में आती हैं। साधारण बुद्धि वाली आत्मा-ें बहुत करके वर्तमान को स्पष्ट जानती हैं लेकिन भविष्-ा और भूतकाल को स्पष्ट नहीं जानतीं। दिव्-ा बुद्धि वाली आत्मा को पास्ट और फ्-ुचर भी इतना ही स्पष्ट होता है जैसे प्रेज़ेन्ट स्पष्ट है। तीनों ही काल साथ-साथ स्पष्ट अनुभव होता है। वैसे सभी कहते भी हैं कि जो सोचो, जो करो, जो बोलो, आगे-पीछे को सोच-समझ करके करो। कर्म के पहले परिणाम को सामने रखो, परिणाम हुआ भविष्-ा। तो नम्बरवन है त्रिकालदर्शी बुद्धि। त्रिकालदर्शी बुद्धि कभी असफ़लता का अनुभव नहीं करेगी। लेकिन बच्चों में तीन प्रकार की बुद्धि वाले हैं। पहला नम्बर सुना-ा सदा त्रिकालदर्शी बुद्धि। दूसरा नम्बर कभी त्रिकालदर्शी और कभी एक कालदर्शी। तीसरा नम्बर अलबेली बुद्धि, जो सदा वर्तमान को देखते, सदा -ाही सोचते कि जो अभी हो रहा है -ाा मिल

रहा है वा चल रहा है इसमें ठीक रहें, भविष्-ा क-ाा होगा इसको क-ाा सोचें। लेकिन अलबेली बुद्धि आदि-मध्-ा-अन्त को न सोचने के कारण सदा सफ़लता प्राप्त करने में धोखा खा लेती है। तो बनना है त्रिकालदर्शी बुद्धि।

त्रिकालदर्शी स्थिति ऐसा श्रेष्ठ आसन है जिस आसन अर्थात् स्थिति द्वारा स्व-ं भी सदा विज-ी और दूसरों को भी विज-ी बनने की शक्ति वा सह-ोग देने वाले हैं। दिव्-ा बुद्धि विशाल बुद्धि है। दिव्-ा बुद्धि बेहद की बुद्धि है। तो चेक करो कि स्व-ं की बुद्धि किस नम्बर की बनाई है? बापदादा ने बच्चों की रिज़ल्ट में देखा कि ज्ञान, गुण, शक्ति-ों का खज़ाना जमा सभी बच्चों के पास है लेकिन जमा होते भी नम्बरवार क-ों हैं? ऐसा कोई भी नहीं दिखाई दि-ाा जिसके पास खज़ाने जमा नहीं हों। सभी के पास जमा हैं ना! फिर नम्बरवार क-ों? अगर किसी से भी पूछेंगे–स्व-ं का ज्ञान है, बाप का ज्ञान है, चक्कर का ज्ञान है, कर्मों के गति का ज्ञान है? सभी के पास सर्वशक्ति-ाँ हैं कि कोई हैं, कोई नहीं हैं? ज्ञान में सभी ने हाँ कि-ाा और शक्ति-ों में हाँ क-ों नहीं कि-ाा? अच्छा, सभी गुण हैं? सर्व गुण बुद्धि में हैं? बुद्धि में ज्ञान भी है, शक्ति-ाँ भी हैं फिर नम्बरवार क-ों? फ़र्क क-ाा होता है? खज़ाने को विधिपूर्वक का-र्ा में लगाना नहीं आता है सम-ा बीत जाता है फिर सोचते हैं कि ऐसे करते थे, इस विधि से चलते थे तो सिद्धि मिल जाती थी। तो सम-ा को जानना और सम-ा प्रमाण शक्ति वा गुण वा ज्ञान को का-र्ा में लगाना–इसके लि-ो दिव्-ा बुद्धि की विशेषता आवश्-ाक है। वैसे ज्ञान की पाइंट्स बहुत सोचते रहते हैं, सुनाते भी रहते हैं, कापि-ों में भी भरी हुई रहती हैं, सबके पास कितनी डा-ारि-ाां इकट्ठी हुई होंगी, काफ़ी स्टॉक हो ग-ाा है ना, तो जैसे बाप के लि-ो गा-ाा हुआ है कि मैं जो हूँ, जैसा हूँ वैसे मुझे जानने वाले कोटों में कोई हैं। जानते तो सभी हैं लेकिन अण्डरलाइन है–जो हूँ, जैसा हूँ, उसमें अन्तर पड़ जाता है। इसी रीति जैसा सम-ा और जो ज्ञान की पाइंट -ाा गुण -ाा शक्ति आवश्-ाक है वैसा का-र्ा में लगाना इसमें अन्तर पड़ जाता है और इसी अन्तर के कारण नम्बर बन जाते हैं। तो कारण समझा? एक तो सम-ा प्रमाण विधि का अन्तर पड़ जाता है, दूसरा कोई भी कर्म वा संकल्प त्रिकालदर्शी बन नहीं करते, इसलि-ो नम्बर बन जाते हैं। कोई भी संकल्प बुद्धि में आता है तो संकल्प है बीज, वाचा और कर्मणा बीज का विस्तार है, अगर संकल्प अर्थात् बीज को त्रिकालदर्शी

स्थिति में स्थित होकर चेक करो, शक्तिशाली बनाओ तो वाणी और कर्म में स्वत: ही सहज सफ़लता है ही है। संकल्प को चेक नहीं करते अर्थात् बीज शक्तिशाली नहीं होता तो वाणी और कर्म में भी सिद्धि की शक्ति नहीं रहती। लक्ष-ा सभी का सिद्धि स्वरूप बनने का है ना, तो सदा सिद्धि स्वरूप बनने की विधि जो सुनाई, उसको चेक करो। बीच-बीच में बुद्धि अलबेली बन जाती है इसलि-े कभी सिद्धि अनुभव करते और कभी मेहनत अनुभव करते।

बापदादा का सभी बच्चों से प-ार की निशानी है कि सब बच्चे सदा सहज सिद्धि स्वरूप बन जा-ें। आपके जड़ चित्रों द्वारा भक्त आत्मा-ें सिद्धि प्राप्त करती रहती हैं, तो चैतन-ा में सिद्धि स्वरूप बने हो तब तो जड़ चित्रों द्वारा भी और आत्मा-ें सिद्धि प्राप्त करती रहती हैं। जो त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रहते हैं तो त्रिकालदर्शी स्थिति समर्थ स्थिति है। इस समर्थ स्थिति वाले व-ार्थ को ऐसा सहज समाप्त कर देते हैं जो स्वप्न मात्र भी व-ार्थ समाप्त हो जाता है। अगर त्रिकालदर्शी बुद्धि द्वारा कर्म नहीं करते हैं तो व-ार्थ का बोझ बार-बार ऊंचे नम्बर में अधिकारी बनने नहीं देता। तो दि-ा बुद्धि का वरदान सदा हर सम-ा का-र्ा में लगाओ।

बापदादा ने पहले भी इशारा दि-ा है कि ज्ञानी--ोगी आत्मा-ें बने हो, अब ज्ञान और -ोग को, शक्ति को प्र-ोग में लाने वाले प्र-ोगशाली आत्मा-ें बनो। जैसे साइन्स की शक्ति का प्र-ोग दिखाई देता है ना, लेकिन साइन्स की शक्ति के प्र-ोग का भी मूल आधार क-ा है? आज जो भी साइन्स ने प्र-ोग के साधन दि-े हैं, उन सब साधनों का आधार क-ा है? साइन्स के प्र-ोग का आधार क-ा है? मैजारिटी देखेंगे लाइट है। लाइट द्वारा ही प्र-ोग होता है। अगर कम्प-ुटर भी चलता है तो किसके आधार से? कम्प-ुटर माइट है लेकिन आधार लाइट है ना। तो आपके साइलेन्स की शक्ति का भी आधार क-ा है? लाइट है ना। जब वह प्रकृति की लाइट द्वारा एक लाइट अनेक प्रकार के प्र-ोग प्रैक्टिकल में करके दिखाती है तो आपकी अविनाशी परमात्म लाइट, आत्मिक लाइट और साथ-साथ प्रैक्टिकल स्थिति लाइट, तो उससे क-ा नहीं प्र-ोग हो सकता! आपके पास स्थिति भी लाइट है और मूल स्वरूप भी लाइट है। जब भी कोई प्र-ोग करना चाहते हो तो पहले अपने मूल आधार को चेक करो। जैसे कोई भी साइन्स के साधन को -ूज़ करेंगे तो पहले चेक करेंगे ना कि लाइट है -ा नहीं है। ऐसे जब -ोग का,

शक्ति-ों का, गुणों का प्र-ोग करते हो तो पहले -ो चेक करो कि मूल आधार आत्मिक शक्ति, परमात्म शक्ति वा लाइट (हल्की) स्थिति है? अगर स्थिति और स्वरूप डबल लाइट है तो प्र-ोग की सफ़लता बहुत सहज कर सकते हो। और सबसे पहले इस अभ्-ास को शक्तिशाली बनाने के लि-ो पहले अपने पर प्र-ोग करके देखो। हर मास वा हर १५ दिन के लि-ो कोई न कोई विशेष गुण वा कोई न कोई विशेष शक्ति का स्व प्रति प्र-ोग करके देखो। क-ोंकि संगठन में वा सम्बन्ध-सम्पर्क में पेपर तो आते ही हैं तो पहले अपने ऊपर प्र-ोग में चेक करो कोई भी पेपर आ-ा लेकिन जो शक्ति वा जो गुण का प्र-ोग करने का लक्ष्-ा रखा, उसमें कहाँ तक सफ़लता मिली? और कितने सम-ा में सफ़लता मिली? जैसे साइन्स का प्र-ोग दिन-प्रतिदिन थोड़े सम-ा में प्रत्-ाक्ष रूप का अनुभव कराने में आगे बढ़ रहा है तो सम-ा भी कम करते जाते हैं। थोड़े सम-ा में सफ़लता ज़्-ादा--ाह साइन्स वालों का भी लक्ष्-ा है। ऐसे जो भी लक्ष्-ा रखा उसमें सम-ा को भी चेक करो और सफ़लता को भी चेक करो। जब स्व के प्रति प्र-ोग में सफ़ल हो जा-ेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्र-ोग करना सहज हो जा-ेगा और जब स्व के प्रति सफ़लता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्र-ोग करने का उमंग-उत्साह स्वत: ही बढ़ता जा-ेगा। अन्-ा आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्व के प्र-ोग द्वारा उन आत्माओं को भी आपके प्र-ोग का प्रभाव स्वत: ही पड़ता रहेगा। जैसे एक दृष्टान्त सामने रखो कि मुझे सहनशक्ति का प्र-ोग करना है तो जब स्व-ं में सहनशक्ति का प्र-ोग करेंगे तो जो दूसरी आत्मा-ें आपकी सहनशक्ति को हिलाने के निमित्त हैं वो भी बच जा-ेंगी ना, उनका भी तो किनारा हो जा-ेगा। और जैसे छोटे-छोटे संगठन में रहते हो, सेन्टर्स हैं तो सेन्टर्स पर छोटे संगठन हैं ना तो पहले स्व के प्रति ट्रा-ाल करो फिर अपने छोटे संगठन में ट्रा-ाल करो। संगठन रूप में कोई भी गुण वा शक्ति के प्र-ोग का प्रोग्राम बनाओ। उससे क-ा होगा? संगठन की शक्ति से उसी गुण वा शक्ति का वा-ुमण्डल बन जा-ेगा, वा-ाब्रेशन फैलेगा और वा-ुमण्डल वा वा-ाब्रेशन का प्रभाव अनेक आत्माओं के ऊपर पड़ता ही है। तो ऐसे प्र-ोगशाली आत्मा-ें बनो। पहले स्व-ं में सन्तुष्टता का अनुभव करो फिर औरों में सहज हो जा-ेगा। क-ोंकि विधि आ जा-ेगी। जैसे साइन्स के कोई भी साधन को पहले सेम्पल के रूप में प्र-ोग करते

हैं फिर विशाल रूप में प्र-ोग करते हैं, ऐसे आप पहले स्व-ं को सेम्पल के रीति से -ाूज़ करो। और -ो प्र-ोग करने की रुचि बढ़ती जा-ोगी और बुद्धि-मन इसमें बिज़ी रहेगा, तो छोटी-छोटी बातों में जो सम-ा लगाते हो, शक्ति-ाँ लगाते हो उनकी बचत हो जा-ोगी। सहज ही अन्तर्मुखता की स्थिति अपनी तरफ़ आकर्षित करेगी। क-ोंकि कोई भी चीज़ का प्र-ोग और प्र-ोग की सफ़लता स्वत: ही और सब तरफ़ से किनारा करा देती है। -ो प्र-ोग तो सभी कर सकते हो ना, कि मुश्किल है? इस वर्ष प्र-ोगशाली आत्मा-ें बनो। समझा क-ाा करना है? और हर एक स्व-ं के प्रति प्र-ोग में लग जा-ेंगे तो प्र-ोगशाली आत्माओं का संगठन कितना पॉवरफुल बन जा-ोगा! वह संगठन की किरणें अर्थात् वा-ाब्रेशन्स बहुत का-र्ा करके दिखा-ेंगी। इसमें सिर्फ दृढ़ता चाहि-ो–'मुझे करना ही है'। दूसरों के अलबेलेपन का प्रभाव नहीं पड़ना चाहि-ो। आपकी दृढ़ता का प्रभाव औरों पर पड़ना चाहि-ो। क-ोंकि दृढ़ता की शक्ति श्रेष्ठ है -ाा अलबेलेपन की शक्ति श्रेष्ठ है? बापदादा का वरदान है जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफ़लता है ही। तो क-ाा बनेंगे? प्र-ोगशाली, त्रिकालदर्शी आसनधारी। और तीसरा क-ाा करेंगे? जैसा सम-ा, वैसी विधि से सिद्धि स्वरूप। तो वर्ष का -ो होमवर्क है। -ो होमवर्क स्वत: ही बाप के समीप ला-ोगा। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा–कोई भी कर्म करने के पहले आदि-मध्-ा-अन्त को सोच-समझ कर्म कि-ाा और करा-ाा। अलबेलापन नहीं कि जैसा हुआ ठीक है, चलो, चलाना ही है। नहीं। तो फ़ॉलो ब्रह्मा बाप। फ़ॉलो करना तो सहज है ना! कॉपी करना है ना, कॉपी करने का तो अक्ल है ना!

अच्छा, -ो ग्रुप चांस लेने वाला ग्रुप है। एक्स्ट्रा लॉटरी मिली है। जो अचानक लॉटरी मिलती है तो उसकी खुशी ज़-ाादा ही होती है। तो -ो लक्की ग्रुप हुआ ना, चांस लेने वाला लक्की ग्रुप। दूसरे सोचते रहते कब जा-ेंगे और आप पहुँच ग-ो। अब डबल विदेशि-ों का टर्न शुरु होने वाला है। भारतवासि-ों ने अपनी लॉटरी ले ली। चारों ओर के डबल विदेशी बच्चों ने जो रिट्रीट का प्रोग्राम बना-ाा है–उसमें मेहनत अच्छी की। विशेष निमित्त आत्माओं को समीप लाने की विधि अच्छी है। और जितना हिम्मत रख आगे बढ़ते रहे हैं उतनी सफ़लता हर वर्ष श्रेष्ठ से श्रेष्ठ मिलती रही है। ऐसे अनुभव होता है ना! कोई सम-ा था जो निमित्त विशेष आत्माओं से सम्पर्क करना भी मुश्किल लगता था और अभी क-ाा

लगता है? जितना सोचते हो उससे और ही ज-ादा आते हैं ना! तो -े हिम्मत का प्रत-ाक्षफल है। भारत में भी सम्पर्क बढ़ता जाता है। पहले आप निमन्त्रण देने की मेहनत करते थे और अभी स्व-ं आने की ऑफ़र करते हैं। फ़र्क पड़ ग-ा है ना! वो कहते हैं हम चलें और आप कहते हो नम्बर नहीं है। -े है 'हिम्मते बच्चे मददे बाप' का प्रत-ाक्ष स्वरूप। अच्छा!

चारों ओर के मास्टर त्रिकालदर्शी आत्माओं को, सदा सम-ा के महत्व को जानने और सम-ा प्रमाण खज़ाने को का-र्ा में लगाने वाले दि०-ा बुद्धिवान आत्माओं को, सदा अन्तर्मुखता की प्र-ोगशाला में प्र-ोग करने वाली प्र-ोगशाली आत्माओं को, सदा हिम्मत द्वारा बाप के मदद का प्रत-ाक्ष अनुभव करने वाली आत्माओं को बापदादा का -ाद-प्-ार और नमस्ते।

दादि-ों से मुलाकात

आप निमित्त आत्मा-ें किस प्र-ोगशाला में रहते हो? सारा दिन कौन-सी प्र-ोगशाला चलती है? नई-नई इन्वेन्शन करते रहते हो ना! न-े-न-े अनुभव करते जाते हो और नई-नई विधि की टचिंग होती रहती है। क-ोंकि जो निमित्त हैं उनको विशेष नई-नई बातें टच होने का विशेष वरदान है। थोड़ा सम-ा भी बीतेगा तो विचार चलते हैं ना, टचिंग आती है ना कि अभी -े हो, अभी -े हो, अभी -े होना चाहि-े। तो निमित्त आत्माओं को विशेष उमंग-उत्साह बढ़ाने के वा परिवर्तन शक्ति को बढ़ाने के प्लैन की ज़रूरत है। इसके बिना रह नहीं सकते हैं। बुद्धि चलती है ना। देख-देख आश्च-र्वत् नहीं होते लेकिन उमंग-उत्साह में आगे बढ़ाने के लिए प्लैनिंग बुद्धि बनते हैं। मा-ा संगठन को हिलाने के न-े-न-े प्लैन बनाती है, नई-नई बातें सुनती हो ना और आप लोग सभी को हिम्मत-उमंग में लाने के प्लैन बनाते हो। कभी आश्च-र्ा लगता है? नहीं लगता है ना। मा-ा भी पुरानी विधि से थोड़ेही अपना बना-ोगी। वो भी तो नवीनता ला-ोगी ना।

अच्छा!

ग्रुप नं. १

अविनाशी अधिकार निश्चित है इस स्मृति से सदा निश्चिन्त रहो, सब बोझ बाप को दे दो

भी अपने को बाप के वर्से के अधिकारी आत्मा-ें अनुभव करते हो। अधिकारी आत्माओं की निशानी क-ाा होती है? अधिकार का निश्च-ा और नशा रहता है। -ो अविनाशी रूहानी नशा है। तो अधिकार में क-ाा-क-ाा मिला है, उसकी लिस्ट निकालो तो कितनी है? बड़ी लिस्ट है -ाा छोटी लिस्ट है? तो सदैव अपने भिन्न-भिन्न प्राप्त अधिकारों को सामने रखो। इमर्ज रूप में लाओ। जितना इमर्ज होगा, स्मृति में होगा, तो स्मृति की समर्थी आती है। कभी किस अधिकार को -ाद करो, कभी किस अधिकार को -ाद करो। वेराइटी है ना। आजकल के मानव को भी वेराइटी में रुचि होती है ना। तो आपके पास कितनी वेराइटी है? बहुत है ना! कभी वरदान को इमर्ज करो, कभी वर्से में खज़ाने जो मिले हैं उनको इमर्ज करो तो कैसी स्थिति रहेगी? क-ोंकि जैसी स्मृति वैसी स्थिति रहती है। अगर स्मृति अधिकार की रही तो स्थिति क-ाा रहेगी? खुशी में नाचते रहेंगे ना। आजकल की दुनि-ाा में किसी को रिवाजी अधिकार भी मिलता है तो कितना मेहनत करके अधिकार लेते हैं, जानते हैं -ाह सदा काल का नहीं है फिर भी कितना कुछ करते हैं। और आपको बिना मेहनत के अधिकार मिल ग-ाा। मेहनत करनी पड़ी क-ाा? बच्चा बनना अर्थात् अधिकार लेना। मेरा माना और अधिकार मिला। तो वाह मेरा अधिकार! वाह मैं श्रेष्ठ अधिकारी आत्मा! हद के अधिकार में नहीं, बेहद के अधिकार में। हद के अधिकार के पीछे अगर कोई जाता है तो बेहद का अधिकार गंवाता है। तो सदा बेहद के अधिकार की खुशी में रहो। खुश रहते हो ना? आप जैसी खुशी किसके पास है? निश्चिन्त हो ग-ो, कोई चिन्ता है क-ाा? पता नहीं, क-ाा होगा--ो चिन्ता है? निश्चिन्त हैं। क-ोंकि अविनाशी अधिकार निश्चित ही है। तो जहाँ निश्चित होता है वहाँ निश्चिन्त होते हैं। कोई भी बात निश्चित नहीं होती है तो उसकी चिन्ता रहती है, पता नहीं क-ाा होगा! माता-ें सभी निश्चिन्त है कि कोई-कोई चिन्ता रहती है? अगर सब बाप के हवाले कर दि-ाा तो निश्चिन्त होंगे। अपने ऊपर बोझ रखा तो निश्चिन्त नहीं

होंगे, फिर चिन्ता ज़रूर होगी। मेरी ज़िम्मेवारी है, मेरी फ़र्ज-अदाई है, मेरापन आना माना चिन्ता। अगर फ़र्ज है -ा ज़िम्मेवारी है तो बेहद की है, हद की नहीं। विश्व की है। दो-चार की नहीं। अपने को अभी जगत माता समझती हो कि चार-पांच बच्चे, पोत्रे पोत्रि-ों की माता-ें हो? किसी आत्मा को भी देखेंगे तो क-ा लगता है? -ाह हमारा परिवार है? कि सिर्फ लौकिक को अपना परिवार समझते हो? बेहद परिवार के हैं। बाप की सह-ोगी आत्मा-ें हैं। बेहद का नशा है ना, कि कभी हद का, कभी बेहद का? जैसे बाप वैसे बच्चे होते हैं तो बाप बेहद का बाप है तो बच्चे भी बेहद के हुए ना। तो क-ा -ाद रखेंगे? हम अधिकारी आत्मा-ें हैं। सिर्फ वर्से के नहीं, वरदानों के भी–डबल अधिकार है। वरदान भी देखो कितने मिलते हैं! रोज़ वरदान मिलता है ना! तो वरदानों से भी झोली भरते हो और वर्से से भी झोली भरते हो। इसलि-ो सदा भरपूर रहते हो, खाली नहीं। सदा -ाह स्मृति रखो कि अनेक बार की अधिकारी आत्मा-ें हैं।

सभी ठीक है? हलचल तो नहीं है? कभी व्-ार्थ की, कभी और कोई परिस्थिति की, प्रकृति की हलचल होती है? जो विश्व को अचल-अडोल बनाने वाले हैं वो स्व-ं कैसे हलचल में आ-ेंगे? परिस्थिति कितनी भी बड़ी हो लेकिन स्व-स्थिति के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति क-ा है? कुछ भी नहीं है। महारथी को कोई हिला नहीं सकता। तो स्व-ं सदा अचल बन औरों को भी अचल बनाना। हलचल का नामनिशान भी नहीं। बाप से प्-ार है ना तो प्-ार की निशानी होती है समान बनना।

ग्रुप नं. २

अपने श्रेष्ठ टाइटल्स की स्मृति से रूहानी नशे का अनुभव करो, वाह-वाह के गीत सदा गाते रहो

सदा क-ा से क-ा बन ग-ो--ो स्मृति रहती है? कल कौड़ी तुल्-ा थे और आज हीरे तुल्-ा बन ग-ो। तो कहाँ कौड़ी और कहाँ हीरा–कितना अन्तर है? जब अन्तर का मालूम होता है तो कितनी खुशी होती है! बाप ने क-ा से क-ा बना दि-ा! कल अन्धकार में थे और आज रोशनी में आ ग-ो। तो

अन्धकार में क-ाा मिला? ठोकरें मिली ना। अन्धकार में ठोकर खाते हैं और रोशनी में इनज्वा-ा करते हैं। तो कल क-ाा और आज क-ाा – -ो सदा सामने स्पष्ट हो। और बापदादा सदा कहते हैं कि डबल हीरो बन ग-ो। एक हीरे समान जीवन और दूसरा इस ड्रामा के हीरो एक्टर बन ग-ो। तो डबल हीरो हो ग-ो ना। अगर सारे ड्रामा के अन्दर देखो तो हीरो पार्टधारी कौन है? कहेंगे ना हम हैं। तो डबल हीरो हैं। तो डबल खुशी है ना। ऐसे तो देखो आपको बाप द्वारा कितने टाइटल मिलते हैं? टाइटल्स की लिस्ट है ना। रोज़ की मुरली में कोई न कोई विशेष टाइटल मिलता है। तो टाइटल का कितना नशा होता है! किसको प्रधान मन्त्री -ाा प्रेज़ीडेन्ट टाइटल दे तो कितना नशा रहेगा! और आपको टाइटल देने वाला कौन? जो भाग-विधाता बाप है वो स्व-ं बच्चों को टाइटल देते हैं। तो जैसे बाप अविनाशी तो टाइटल भी अविनाशी। विनाशी टाइटल का नशा विनाशी, अल्पकाल का रहता है। और -ो रूहानी टाइटल का नशा अविनाशी है। जिसे अविनाशी नशा रहता है उसके दिल में सदा -ो गीत बजता है–वाह मेरा श्रेष्ठ भाग-ा! ऑटोमेटिक बजता है, बजाना नहीं पड़ता है। दूसरी जो भी मशीनरीज़ होती हैं वो आज ठीक हैं, कल खराब हो जा-ेंगी लेकिन -ो दिल का गीत सदा ही बजता रहता है। तो -ो गीत गाना आता है? कौन-सा गीत? वाह मेरा श्रेष्ठ भाग-ा! जैसे देह का आक्-ुपेशन स्वत: -ाद रहता है। एक बार मालूम पड़ा कि मैं -ो हूँ तो भूलता नहीं है। तो 'मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ' -ो अविनाशी आक्-ुपेशन भी भूलना नहीं चाहि-ो। -ो हर जन्म का आक्-ुपेशन है। वो एक जन्म का आक्-ुपेशन होता है। चाहे शरीर बदलेंगे लेकिन आत्मा तो अविनाशी है ना। कोई भी जन्म में आत्मा तो अमर ही है, अविनाशी है। लेकिन इस सम-ा आप विशेष आत्मा-ें हो। आत्मा तो हो ही लेकिन विशेष आत्मा हो। अपनी विशेषता-ें सदा -ाद रहती हैं?

तो डबल हीरो हो साधारण पार्टधारी नहीं। हीरे समान बने हो -ाा अभी भी कुछ पत्थर है, कुछ हीरा है? कहाँ हीरे की वैल्-ु, कहाँ पत्थर की वैल्-ु! अगर विस्मृति है तो पत्थर है और स्मृति है तो हीरा है। अब विस्मृति का सम-ा समाप्त हुआ। जो हूँ, जैसा हूँ–वो भूल नहीं सकता। तो विस्मृति की दुनि-ाा को छोड़ कर आ ग-ो। अभी संगम-ुग स्मृति का -ुग है। कलि-ुग विस्मृति का -ुग है। तो आप सब संगम-ुग के रहवासी हो -ाा कभी-कभी कलि-ुग में चक्कर लगाने चले जाते

हो? अगर थोड़ा भी बुद्धि गई तो चक्कर में फंस जा-ोंगे। विस्मृति की दुनि-ा से निकल आ-ो। कलि-ुग में तो बहुत रौनक है! तो उस रौनक को क-ों छोड़कर आ ग-े? रौनक ज़रूर है लेकिन धोखा देने वाली रौनक है। बाहर से रौनक दिखाई देती है और अन्दर धोखा देने वाली है। क-ा अनुभव है? धोखा देने वाली रौनक है ना। सब अच्छी तरह से अनुभव कर चुके हो ना? कि अभी कुछ अनुभव करना बाकी है? धोखा खाते-खाते थक ग-े। आर्टीफ़िश-ाल दुनि-ा है ना। लेकिन चमक आर्टीफ़िश-ाल की ज़-ादा है। तो कभी आर्टीफ़िश-ाल चमक आकर्षित तो नहीं करती? जब एक बार धोखा खाकर देख लि-ा तो दुबारा धोखा खा-ा जाता है क-ा? इसलि-े बच ग-े।

माता-ें अपना श्रेष्ठ भाग-ा देख खुशी में नाचती रहती हो ना। संगम पर शक्ति-ों की बारी पहले है। द्वापर-कलि-ुग में पाण्डवों को चांस मिलता है और संगम पर शक्ति-ों को चांस मिलता है। अभी देखो बाप ने माताओं को चांस दि-ा तो दुनि-ा में भी आजकल माताओं को चांस देने का बुद्धि में आ-ा है। धर्मनेताओं में देखो पहले कोई माता नहीं होती थी लेकिन अभी महामण्डलेश्वरि-ां भी हैं। अभी माता-ें भी गुरु बन जाती हैं। तो जब बाप ने चांस दि-ा तो लोग भी चांस देने लगे। तो माताओं को डबल खुशी है ना कि हमको बाप ने ऊंचा बना दि-ा!

ग्रुप नं. ३

सर्व श्रेष्ठ शक्ति शान्ति की शक्ति है – जिससे असम्भव को भी सम्भव बना सकते हो

एक बल एक भरोसा – ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हैं, ऐसे अनुभव करते हो? एक बल एक भरोसा है -ा अनेक बल अनेक भरोसे हैं? एक बल कौन सा है? साइलेन्स का बल, -ोग का बल। एक बाप में भरोसा अर्थात् निश्च-ा होने से -ह साइलेन्स का बल, -ोग का बल स्वत: ही अनुभव होता है। तो साइलेन्स की शक्ति वाले हैं, -ोग बल वाले हैं – -ह स्मृति रहती है? शान्ति की शक्ति सर्व श्रेष्ठ शक्ति है। क-ोंकि और सभी शक्ति-ां कहाँ से निकलती हैं? शान्ति की शक्ति से ना! आज साइन्स की शक्ति का प्रभाव है लेकिन वह भी निकली कहाँ

से? शान्ति की शक्ति से निकली ना? तो शान्ति की शक्ति द्वारा जो चाहो वह कर सकते हो। असम्भव को भी सम्भव कर सकते हो। जो दुनि-ा वाले आज असम्भव कहते हैं आपके लिए वह सम्भव है ना! तो सम्भव होने के कारण सहज लगता है। मेहनत नहीं लगती। दुनि-ा वाले तो अभी भी -ाही सोचते रहते हैं कि परमात्मा को पाना बहुत मुश्किल है। और आप क-ा कहेंगे? पा लि-ा। वह कहेंगे कि परम आत्मा तो बहुत ऊंचा हज़ारों सू-ाँ से भी तेजोम-ा है और आप कहेंगे वह तो बाप है। स्नेह का सागर है। जलाने वाला नहीं है। हज़ारों सू-ा से तेजोम-ा तो जला-ेगा ना और आप तो स्नेह के सागर के अनुभव में रहते हो, तो कितना फ़र्क हो ग-ा। जो दुनि-ा ना कहती वह आप हाँ करते। फ़र्क हो ग-ा ना। कल आप भी नास्तिक थे और आज आस्तिक बन ग-े। कल मा-ा से हार खाने वाले और आज मा-ाजीत बन ग-े। फ़र्क है ना। माता-ें जो कल पिंजड़े की मैना थी और आज उड़ती कला वाले उड़ते पंछी है। तो उड़ती कला वाले हो -ा कभी-कभी वापस पिंजड़े में जाते हो? कभी-कभी दिल होती है पिंजड़े में जाने की? बंधन है पिंजड़ा और निर्बन्धन है उड़ना। मन का बंधन नहीं होना चाहिए। अगर किसी को तन का बंधन है तो भी मन उड़ता पंछी है। तो मन का कोई बंधन है -ा थोड़ा-थोड़ा आ जाता है? जो मनमनाभव हो ग-े वह मन के बंधन से सदा के लिए छूट ग-े। अच्छा, प्रवृत्ति को सम्भालने का बंधन है? ट्रस्टी होकर सम्भालते हो? अगर ट्रस्टी हैं तो निर्बन्धन और गृहस्थी हैं तो बंधन है। गृहस्थी माना बोझ और बोझ वाला कभी उड़ नहीं सकता। तो सब बोझ बाप को दे दि-ा -ा सिर्फ थोड़ा एक दो पोत्रा रख दि-ा है? पाण्डवों ने थोड़ा-थोड़ा जेबखर्च रख दि-ा है? थोड़ा-थोड़ा रोब रख दि-ा, क्रोध रख दि-ा, -ाह जेबखर्च है? मेरे को तेरा कर दि-ा? कि-ा है -ा थोड़ा-थोड़ा मेरा है? ठगी करते हैं ना मेरा सो मेरा और तेरा भी मेरा। ऐसी ठगी तो नहीं करते? आधाकल्प तो बहुत ठगत रहे ना। कहना तेरा और मानना मेरा तो ठगी की ना। अभी ठगत नहीं लेकिन बच्चे बन ग-े। उड़ती कला कितनी प्-ारी है, सेकेण्ड में जहाँ चाहो वहाँ पहुंच जाओ। उड़ती कला वाले सेकेण्ड में अपने स्वीट होम में पहुंच सकते हैं। इसको कहा जाता है -ोगबल, शान्ति की शक्ति।

माताओं को नाम ही दि-ा है शिव शक्ति-ां। तो शक्ति नाम -ाद आने से

स्वत: ही शक्ति आ जा-ेगी। हम घर की माता-ें हैं तो कमज़ोर हैं। शक्ति हैं तो शक्तिशाली हैं। एक बल एक भरोसा अर्थात् सदा शक्तिशाली। पाण्डवों को भी सदा शक्तिशाली दिखाते हैं। कल्प कल्प की शक्ति-ाां और पाण्डव सेना वाले हैं – -ाह स्पष्ट स्मृति है ना तो हम ही थे, हम ही हैं और सदा हम ही बनेंगे। -ाह स्मृति स्पष्ट है कि सोचते हो तो -ाद आता है? -ाा सुना है तो समझते हो? नहीं। दिल में वह इमर्ज होना चाहिए। बुद्धि में स्पष्ट होना चाहिए–हाँ हम ही थे, हैं और होंगे। जहाँ एक बल एक भरोसा है वहाँ कोई हिला नहीं सकता। ऐसी कोई मा-ाावी शक्ति है कि कमज़ोर है? एक बल एक भरोसे वाली आत्माओं के आगे मा-ाा मूर्छित हो जाती है, सरेन्डर हो जाती है। सरेन्डर हो गई कि कभी कभी जाग जाती है? तो सदा मा-ाजीत कभी हार कभी जीत वाले नहीं। सदा विज-ाी। तो -ाही नशा सदा रहे कि विज-ा हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। -ाह रूहानी नशा है ना। इस जन्म-सिद्ध अधिकार को कोई छीन नहीं सकता।

ग्रुप नं. ४

मधुबन निवासी बनना अर्थात् बेहद सेवा की स्टेज पर आना

मधुबन निवासि-ों से सबका प्-ाार है ना। सभी का मधुबन निवासि-ों से प्-ाार क-ों है? क-ाा कारण है? मधुबन निवासि-ों से सबका प्-ाार इसीलिए है क-ोंकि मधुबन निवासी अर्थात् बड़े ते बड़े सेवाधारी। मधुबन निवासी होना अर्थात् सेवा की स्टेज पर आना। जो भी मधुबन में आ-ो तो सेवा के लिए आ-ो ना। और बापदादा भी अपने ऊपर सबसे बड़े से बड़ा टाइटल विश्व सेवाधारी का ही देते हैं। तो मधुबन निवासी अर्थात् जितना बाप से प्-ाार उतना सेवा से प्-ाार। मधुबन निवासी हर सेकण्ड सेवा की स्टेज पर रहते हैं। चलते फिरते सेवा ही करते हो ना! एक्जैम्पुल हो ना! तो मधुबन निवासी हर आत्मा को, हरेक आत्मा विशेष आत्मा के रूप में देखती है। मधुबन निवासी अर्थात् विशेष आत्मा। संकल्प में भी विशेषता, बोल में भी विशेषता और कर्म में भी विशेषता। कितना महत्व है मधुबन निवासी आत्माओं का। ऐसी स्मृति रहती है? मधुबन को सब फ़ालो करते हैं। मधुबन के बाप से प्-ाार है तो मधुबन निवासि-ों से भी प्-ाार है।

जैसे मधुबन के बाप की महिमा वैसे मधुबन निवासि-ों की महिमा है। क-ोंकि मधुबन बाप की कर्मभूमि, चरित्रभूमि सो तपस्वी भूमि है। ऐसे भूमि का अनुभव होता है ना? भूमि का वा-ाब्रेशन, वा-ुमण्डल सह-ोग देता है। मधुबन वालों के ऊपर बापदादा की भी विशेष ब्लैसिंग है। तो अपने श्रेष्ठ भाग-ा को प्रैक्टिकल में अनुभव करते हुए आगे बढ़ रहे हो? सभी उड़ती कला वाले हो -ाा कभी रुकती कला कभी उड़ती कला? ब्रह्मा बाप की विशेषता कौन सी गा-ान करते हो? अथक सेवाधारी। तो पुरुषार्थ की गति में भी अथक। थकने वाले नहीं, औरों को भी उड़ाने वाले। ज़िम्मेवारी है ना। क-ोंकि मधुबन वालों को सभी सहज फ़ालो करते हैं।

तो इस वर्ष में अपने तीव्र पुरुषार्थ का कोई विशेष प्लैन बना-ाा है? क-ोंकि मधुबन के पुरुषार्थ की लहर भी चारों ओर फैलती है। मधुबन वाले भट्ठी करते हैं, तपस-ाा पावरफुल करते हैं तो चारों ओर वह वा-ाब्रेशन जाता है। तो कुछ न-ाा तीव्र गति का प्लैन बनाओ। जैसे कोई भी बड़ा स्थान बनाते हैं तो पहले क-ाा करते हैं? ज्ञान सरोवर बनाना था तो पहले मॉडल बना-ाा ना। तो मधुबन निवासी हैं मॉडल। तो जितना मॉडल वैल-ुएबुल होता है, उतना ही ओरीज्नल मकान भी वैल-ुएबुल होता है। निमित्त तो मॉडल ही बनता है ना। कोई न-ाा प्लैन बना-ाा है? क-ोंकि मधुबन निवासी इन्वेन्टर हैं ना। (आपने जो होमवर्क दि-ाा वह करेंगे) अच्छा, मधुबन निवासी पहले मधुबन के ग्रुप में प्र-ोग करके अनुभव सुना-ोंगे तो सबमें उमंग-उत्साह आ-ोगा। जिसको भी देखें सबका एक दृढ़ संकल्प हो तो संगठन का बल तो मिलता है ना। मधुबन की -ाही विशेषता सभी को प्रि-ा लगती है कि हर आत्मा का हर कर्म विशेष हो। साधारण नहीं। क-ोंकि -ाहाँ सह-ोग बहुत है। एक तो सभी आत्माओं की शुभ भावना का मधुबन निवासि-ों को बहुत सह-ोग है। कोई भी बात होगी तो सभी की भावना पहले मधुबन के तरफ़ जाती है। वा-ुमण्डल की, पढ़ाई की, बाहर के पोल-ुशन की कितनी मदद है -ाहाँ मधुबन में। प्रकृति की पोल-ुशन भी नहीं है। तो रिजल्ट में मधुबन निवासी सभी किस माला में आ-ोंगे? पहली माला -ाा दूसरी माला? पहली में। सारी सीट मधुबन वाले ही लेंगे? सभी खज़ानों से भरपूर हो ना? कि कोई कमी है? कोई सैलवेशन चाहिए? कि सदा तृप्त आत्मा-ें हो? सभी ज्ञान के ख़ज़ानों में भी

भरपूर, शक्ति-ों में भी भरपूर, गुणों में भी भरपूर? (हाँ जी) गुणमूर्त देखना हो तो कहाँ देखें? मधुबन में -ा और स्थानों में? सबमें मधुबन नम्बरवन। जिसको जब देखें जहाँ देखें गुणमूर्त, शक्तिमूर्त, ज्ञान मूर्त, साधारण नहीं। मधुबन माना ही विशेष। मधुबन वाले बेफ़िक्र बादशाह तो हैं ही -ा कोई फ़िक्र रहता है? (सम्पूर्ण बनने का) -ह फ़िक्र फ़ख़र में लाता है। फ़िक्र, फ़िक्र नहीं है फ़ख़र है। बनना ही है। अच्छा।

मधुबन निवासि-ों के तीव्र पुरुषार्थ का सलोगन कौन सा है? (जो कर्म हम करेंगे हमें देख और करेंगे) सलोगन ठीक सुना-ा। जो भी कर्म करो पहले -ह सलोगन -ाद रखो कि जो हम करेंगे वह सब करेंगे। तो स्वत: ही विशेष कर्म होगा। अच्छा, बाकी कारोबार तो ठीक चल रही है ना। सबकी डिपार्टमेंट ठीक है? अच्छा!

> जब स्व के प्रति प्र-ोग में सफ़ल हो जा-ेंगे तो दूसरी आत्माओं के प्रति प्र-ोग करना सहज हो जा-ेगा और जब स्व के प्रति सफ़लता अनुभव करेंगे तो आपके दिल में औरों के प्रति प्र-ोग करने का उमंग-उत्साह स्वत: ही बढ़ता जा-ेगा। अन्-ा आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में स्व के प्र-ोग द्वारा उन आत्माओं को भी आपके प्र-ोग का प्रभाव स्वत: ही पड़ता रहेगा।